वेदविज्ञानभास्वती, अंक : ६-७ (संयुक्तांक), २०२३-२४, ८७-९४
@ वैदिक विज्ञान केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वैदिक दर्शन में पदार्थ की अवधारणा

जितेंद्र कुमार*, सद्गुरु प्रकाश एवं सुनील कुमार मिश्र***

* रसायन विज्ञान विभाग, **प्राणि विज्ञान विभाग, एम. एल. के. (पी.जी.) कॉलेज, बलरामपुर, भारत

सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य प्रारंभ से ही ज्ञान के विविध स्रोतों से समृद्ध रहा है। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य में विज्ञान और तकनीक के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित सिद्धांतों और अनुप्रयोगों का विशद वर्णन है। प्रस्तुत समीक्षात्मक आलेख में हम वैदिक दर्शन की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं में पदार्थ की संरचना की मूल इकाई परमाणु और अणुओं की विभिन्न अवधारणाओं का परिचय उपस्थापित करेंगे। आधुनिक विज्ञान समस्त सृष्टि का उत्पादन कारण प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन तथा न्यूट्रान नामक तीन प्रकार के मूलभूत कणों को मानता है, जबकि वैदिक दर्शन में मूल तत्व सत्, रजस् और तमस् माने जाते हैं। समस्त जड़ जगत इन्ही मूल तत्वों के संयोजन का परिणाम है। सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा तथा जैन दर्शन, जगत जैसा है वैसा ही स्वीकार करते हैं। वे हमारी चेतन अनुभूति से स्वतंत्र बाह्य जगत के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सूक्ष्मतम स्तर पर अणुओं और परमाणुओं में होने वाली घटनाएं बड़े बृहद स्तर पर दिखाई पड़ने वाली घटनाओं के आधार बिन्दु हैं।

मुख्य शब्द: *वैशेषिक, सांख्य, न्याय, सत्, रजस्, तमस्, द्रव्य, गुण, पदार्थ, अणु, परमाणु, त्रसरेणु।*

भारत भूमि आदिकाल से ही बौद्धिकता की पोषक रही है। इसकी संस्कृति, परम्पराएं, मान्यताएं, आस्था और समर्पण ज्ञान के उद्गम बिन्दु रहे हैं। इसका ज्ञानभंडार मात्र आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक आयामों तक सीमित नहीं है। आदिकाल से ही हमारे गुरुकुलों के संस्थापक ऋषियों ने अपनी साधना और तपस्या से भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, आयुर्विज्ञान, अभियांत्रिकी और गणित के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रस्तुत लेख में हम वैदिक दर्शन में उपलब्ध सृष्टि की संरचना से सम्बन्धित सिद्धांतो की चर्चा करेंगे।

ऋग्वेद के दशम मंडल में एक सूक्त है, जिसे विश्वकर्मन सूक्त कहते हैं (ऋग्०10/81) । उक्त सूक्त में इस सृष्टि के रचयिता को ही होता, ऋषि और पिता कहा गया है। उसने किस पदार्थ से इस दृश्यमान संसार को निर्मित किया, यह यक्ष प्रश्न अद्यतन विद्यमान रहा है। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त, (ऋग्०10[129] 1 से 7) पुरुष सूक्त (ऋग्०10/90/1 से 16) और दाक्षायणी सूक्त (ऋग्०10/72/1 से 9) आदि में सृष्टि की उत्पत्ति का विवेचन है। ऋग्वेद के अघमर्षण सूक्त (ऋग्०10/190) में तप से ऋत और सत्य की उत्पत्ति बतायी गयी, तत्पश्चात अंधकार या रात्रि की और अंत में जल से परिपूर्ण समुद्र की उत्पत्ति हुई।

* आवाज : भवन संख्या-977, तुलसीदास पोखरा के समीप, खालवा उत्तर, बलरामपुर, उ.प्र., Email : sunilmishra28875@gmail.com

ऋतं च सव्यञ्चाभीद्धात तपोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजाग्रत ततः समुद्रो आर्णवः।।

वैदिक दर्शन में आणविक सिद्धांत

वैदिक दर्शन एक वैज्ञानिक, तार्किक, आध्यात्मिक और सार्वभौमिक मानवता पर आधारित विचारधारा का पर्याय है। यहाँ विश्वास को नहीं, तर्क को प्रमाण माना जाता है। यद्यपि आधुनिक विज्ञान से अलग भारतीय विचारधारा ने आत्मा को समझने और उसको अनुभव करने पर अत्यधिक बल दिया। उसने आत्मज्ञान के लिए भौतिक पदार्थ की जानकारी को भी आवश्यक माना।

आधुनिक विज्ञान के दृष्टिकोण से समस्त सृष्टि का उपादान कारण प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन तथा न्यूट्रॉन नामक तीन तत्व हैं। प्रोटॉन तत्व आकर्षण शक्ति का पुंज है जबकि इसके विपरीत इलेक्ट्रॉन अपकर्षण-स्वरूप है। पहला अपनी ओर दूसरे की आकृष्ट करता है किन्तु दूसरा अपने को अपकर्षण (repulsion) में प्रवृत्त रखता है, इनको इसीलिए यथाक्रम धनावेशित और ऋणावेशित कहा जाता है। तीसरे तत्व न्यूट्रान में ये दोनों लक्षण नहीं होते। समस्त विश्व के मूल में यही पदार्थ हैं, इन्हीं से सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण हुआ है। वैदिक दर्शन में मूल तत्व सत्, रजस् और तमस् के नाम से जाने जाते हैं। समस्त जड़ जगत इन्हीं तीन तत्वों से निर्मित हैं। सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल मुनि ने इनका स्वरूप इस प्रकार बताया है कि 'सत्' प्रीतिरूप है; प्रीति का अर्थ है दूसरे को अपनी ओर आकृष्ट करना है। इसके विपरीत 'रजस' अप्रीतिरूप है, और दूर हटाने की प्रवृत्ति रखता है। तीसरा तमस विषाद रूप अर्थात न ही प्रीतिरूप और न तत्व के विषय में अप्रीतिरूप। मूल तत्व के विषय में ये दोनों (आधुनिक विज्ञान और वैदिक दर्शन) कितनी अधिक समान परिभाषा को प्रस्तुत करते हैं, यह तथ्यपरक है। यह स्थिति मूल तत्व विषयक ज्ञान की सत्यता को निरूपित करती है।

जिस प्रकार तीन तत्वों (प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन व न्यूट्रॉन अथवा सत्, रजस् व तमस्) की विभिन्न संख्या अथवा मात्रा में उपस्थिति से पदार्थ बनता है, इसी प्रकार इनके न्यूनाधिक गुणों के सम्मिश्रण से युग का निर्माण होता है। महाकवि तुलसीदास ने सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग आदि चारों युगों को इन तीन तत्वो के न्यूनाधिक मिश्रण से निर्मित होने को स्वीकार किया है। रामचरित मानस में इस तथ्य का वर्णन किया गया है-

सुद्व तत्व समता विज्ञाना। कृत प्रभाव प्रसन्नमन जाना।।
तामस बहुत रजोगुन थोरा । कलि प्रभाव विरोध चहुंओरा।।

- (रामचरितमानस, 7, 103)

भारत भूमि ही पृथ्वी का वह क्षेत्र है जिसने सर्वप्रथम 'आणविक सिद्धांत' को प्रकट किया। इसके जनक आदिकाल के प्रसिद्ध वैज्ञानिक ऋर्षि कणाद थे। ईसा से पूर्व छठीं शताब्दी में इस भारतीय आचार्य ने यह कल्पना की थी कि पदार्थ सूक्ष्म कणों से मिलकर निर्मित होते हैं जो और अधिक विभाजित नहीं हो सकते उन्हें 'परमाणु' अर्थात 'सूक्ष्म अणु' कहा गया। अतः किसी पदार्थ के सूक्ष्मतम् और रासायनिक

रूप से अविभाज्य कण, जिनसे अणु बनते हैं, परमाणु कहलाते हैं। अतिसूक्ष्म, इन्द्रियातीत, निरवय और नित्य द्रव्य को परमाणु कहा गया। ये परमाणु चार प्रकार के होते हैं- पार्थिव, जलीय, तैजस और वायवीय अर्थात पृथिवी, जल, अग्नि, और वायु के सूक्ष्मतम कण।

इन परमाणुओं से सृष्टि के क्रम का वर्णन किया जा सकता है। दो परमाणुओं के संयोग से द्वयअणुक का बनना और तीन द्वयअणुकों के संयोग से त्र्यणुक (त्रसरेणु या त्रुटि), चार त्रसरेणुओं के संयोग से चतुरणुक का बनना बताया गया है। इसी क्रम से सृष्टि की उत्पत्ति होती है। द्वयअणुक दिखाई नहीं पड़ते है जबकि त्रसरेणु दिखाई पड़ते हैं। अणु स्वभावत: शान्त और निष्पन्द होते हैं। इनमें जब स्पन्दन (movement) होता है तब सृष्टि की प्रक्रिया शुरू होती है। इसी सिद्धांत को **परमाणुवाद** कहा गया। ईसा से पूर्व पाँचवी और चौथी शताब्दी में यूनान के डिमाक्रिटस और एपिक्यूरस एवं उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ब्रिटिश वैज्ञानिक सर जान डॉल्टन ने भी कुछ इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये थे। कणाद ऋर्षि का विचार था कि परमाणु अविनाशी है और इसका विखंडन नहीं हो सकता है।

जब एक तत्व दूसरे तत्व में रूपान्तरित होता है तो इस क्रिया को वैज्ञानिक भाषा में **उत्परिवर्तन (Transmutation)** कहते हैं। सामान्यतः किसी पदार्थ के असंख्य परमाणु अपने स्वाभाविक संयोग द्वारा अणुओं के छोटे-छोटे समूहों का निर्माण करते हैं। किसी विशिष्ट तत्व के प्रत्येक अणु में एक ही प्रकार के कई परमाणु होते हैं, किन्तु यौगिक या मिश्रित तत्वों में से दो या दो से अधिक प्रकार के भी परमाणु होक सकते हैं। जो पदार्थ एक ही प्रकार के परमाणुओं से बने होते हैं उन्हें **मौलिक पदार्थ** या **रासायनिक तत्व (Elemetry Substance)** कहते हैं किन्तु इसके विपरीत जिन पदार्थों के अणु दो या दो से अधिक परमाणुओं के संयोग से बनते हैं उन्हें **यौगिक पदार्थ (Compond Substance)** कहते हैं।

वैशेषिक दर्शन मे परमाणुवाद

वैशेषिक दर्शन को पदार्थ वादी माना गया है। पदार्थ का अर्थ वह वस्तु है जिसका 'पद' (शब्द) से बोध होता है। अतः जितनी भी वस्तुएं हैं या जिनका भी नामकरण संभव है वे सभी पदार्थ कहे जाते हैं। वैशेषिक दर्शन पदार्थ को दो भागों में बाँटता है- (1) भाव पदार्थ और (2) अभाव पदार्थ । जिनकी सत्ता है अर्थात जो दृष्टिगोचर होते हुए विद्यमान हैं वे भाव पदार्थ कहलाते हैं। भाव पदार्थ छह होते हैं- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय। वैशेषिक सूत्र में केवल इन्हीं का उल्लेख है बाद के ग्रंथकारों ने अभाव नमक सातवें पदार्थ को भी जोड़ दिया है।

द्रव्य- महार्षि कणाद ने द्रव्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है-

पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशं कालो दिगात्मा मन इति द्रव्याणि।। -(वैशेषिक 1/1/5)

अर्थात् पृथ्वी, अप (जल), तेज (अग्नि), वायु, आकाश, काल, दिक् (दिशाएं), आत्मा और मन अर्थात नौ प्रकार के द्रव्य हैं।

गुण- वैशेषिक दर्शन में सत्रह गुण एक दशा में गिनाये गये हैं –

रूप रस गंध स्पर्शा: संख्या परिमाणानि पृथकत्वं संयोग

विभागौ परत्वाअपरत्वे बुद्धय: सुख दु:खं द्वेषो प्रयत्नाश्च गुणा:।। -(वैशेषिक 1/1/6)

अर्थात रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, प्रभाव, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न। इन सत्रह गुणों के अतिरिक्त वैशेषिक दर्शन के प्रशस्तपाद भाष्य में सात अन्य गुणों का समावेश किया गया है। ये सात गुण हैं- 1. गुरुत्व, 2. द्रवत्व, 3. स्नेह, 4. संस्कार, 5. धर्म, 6. अधर्म और 7. शब्द।

इन गुणों में रूप, रस, गंध और स्पर्श चार तत्वों से सम्बन्ध रखते हैं, तथा शब्द आकाश से सम्बन्धित है। इच्छा, सुख, दुख, द्वेष और प्रयत्न, आत्मा के गुण है। संख्या (Number), परिमाण (measure), पृथक्त्व (separation), संयोग (combination), विभाग (division), परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह (स्निग्धता) और संस्कार भौतिक पदार्थों के अन्य गुण हैं।

कुछ दार्शनिक सूक्तों में गुणों का द्रव्यों के साथ संबंध निम्न प्रकार से निरूपित है-

वायु के नौ गुण- स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व और वेग।

तेज (अग्नि) के ग्यारह गुण- स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, वियोग, परत्व, अपरत्व, रूप, वेग और द्रवत्व।

जल के चौदह गुण- स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, वियोग, परत्व, अपरत्व, वेग, द्रवत्व, गुरुत्व, रूप, रस और स्नेह।

पृथिवी के चौदह गुण- स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, वियोग, परत्व, अपरत्व, वेग, द्रवत्व, गुरुत्व, रूप, रस और गंध।

जीवात्मा के चौदह गुण- बुद्धि, सुख, दु:ख, ईच्छा, द्वेष, प्रयत्न, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, भावना, धर्म और अधर्म।

काल के पांच गुण- संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग और विभाग।

दिशा के पाँच गुण- संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग और विभाग।

आकाश के छह गुण- संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग और शब्द।

परमात्मा (ईश्वर) के आठ गुण- संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, बुद्धि, इच्छा और यत्न।

मन के आठ गुण - परतत्व, अपरत्व, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग और वेग।

कर्म- क्रिया को कर्म कहते हैं। वैशेषिक के आचार्य ने पांच प्रकार के कर्मों का वर्णन किया है। जो निम्नवत हैं-

(अ) उत्क्षेपण (ऊपर चढ़ाना या फेंकना) (ब) अवक्षेपण (नीचे फेंकना) (स) अकुंचन (सिकोड़ना) (द) प्रसारण (फैलाना) तथा (य) गमन

उत्क्षेपणम वक्षेपणमाकुंचन प्रसारण गमनभिति कर्म्माणि। -(वैशेषिक 1/1/7)

प्रशस्तपाद भाष्य में गमन के अन्तर्गत कुछ और बातें बताई गयी हैं, जैसे- भ्रमण, रेचन, स्पंदन, उर्ध्वजलन

और उन्नमन।

सामान्य- अनेक वस्तुओं में जो एक सी बुद्धि होती है, उसके कारण को 'सामान्य' कहते हैं। प्रशस्तपाद भाष्य में 'सामान्य' को दो प्रकार का होना बताया गया है- पर और अपर। द्रव्य, गुण और कर्म तीनों ही सत् हैं, अत: सत्ता इन सब में पर-सामान्य है। सभी द्रव्यों में द्रव्यत्व समान है किन्तु यह द्रव्यत्व गुण और कर्म में नहीं है। द्रव्यत्व का होना अपर-सामान्य है। यह द्रव्यत्व समस्त द्रव्यों में तो 'सामान्य' है, लेकिन द्रव्य को गुणों या कर्मों से भिन्न करने में 'विशेष' है। एक वस्तु को दूसरी वस्तु से पृथक करना 'सामान्य' का धर्म है।

विशेष- द्रव्य के अंतिम विभाग में रहने वाला तथा नित्य द्रव्य में विद्यमान रहने वाला पदार्थ विशेष कहा जाता है। नित्य द्रव्यों में परस्पर भेद करने वाला यही एकमात्र पदार्थ है। दिशा, काल, आत्मा, मन, पृथिवी, वायु, जल और अग्नि के परमाणुओं की विशिष्टता की व्याख्या के लिए विशेष को अपनाया जाता है।

द्रव्यत्वं गुणत्वं कर्मत्वं च सामान्यानि विशेषाश्च। *-(वैशेषिक 1/2, 3-5)*

समवाय- वैशेषिक दर्शन में कार्य और करण के बीच का संबंध ही समवाय है। यह एक है और नित्य भी है। अपृथक पदार्थों के बीच में जो संबंध है (आयुतसिद्धानाम् अपृथग् भूतानाम्) तथा आधारभूत पदार्थों के बीच जो संबंध है, वही समवाय है।

अभाव- अभाव वह पदार्थ है जो ऊपर वर्णित पदार्थों के अंतर्गत नहीं आता है। अतः यह सातवां पदार्थ माना जाता है। अभाव का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया जा सकता है। रात में जब हम आकाश की ओर देखते हैं तो उसमें सूर्य का नहीं होना वैसा ही निश्चित रूप से प्रतीत होता है जैसे चंद्रमा या तारों का उपस्थित होना। प्रशस्तपाद भाष्य में अभाव का सविस्तार वर्णन प्राप्त होता है।

न्याय और वैशेषिक में पंचभूत- वैशेषिक दर्शन में वर्णित नौ द्रव्यों में से पाँच द्रव्यों (पृथिवी, अप, तेज, लघु और आकाश) को न्याय दर्शन के आचार्य गौतम ने भूत नाम से सम्बोधित किया है। न्याय दर्शन के अनुसार पृथिवी आदि पंच भूतों के गन्ध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द पांच प्रमुख गुण हैं और प्रकारांतर से ये एक एक इंद्रिय विशेष के विषय है।

पृथिव्यायस्तेजो वायुराकाशमिति भूतानि। -(न्याय 1/1//13)

गंधरसरूप स्पर्श शब्दा: पृथिव्यादि गुणास्तदर्था:। -(न्याय 1/2/14)

भूत	**गुण**	**इन्द्रिय**
पृथिवी	गंध	घ्राण
अप्	रस	जिह्वा
तेज	रूप	नेत्र
वायु	स्पर्श	त्वरित
आकाश	शब्द	श्रोत्र

अणु की संकल्पना- वैशेषिक दर्शन में अणु शब्द का प्रयोग कई स्थानों पर हुआ है। अणु महत के

विपरीत है। अणु का अर्थ है अतिसूक्ष्म और महत का अर्थ है अतिविशद्। श्वेताश्वतरोपनिषद का वाक्य है **अणोरणीयान् महतोमहीयान** अर्थात ब्रह्म सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है और महान से महान है। सर्वव्यापक होने से आकाश और आत्मा "महान" अर्थात महत् परिमाण वाले बताये गये हैं। इसके विपरीत मन को "अणु" अर्थात सूक्ष्म परिमाण वाला बताया गया है।

विभावान्महानकाशस्तथा चात्मा तदभावादणु मनः। -(वैशेषिक 7/1/22-23)

अणु सूक्ष्म है पर इसकी अनुपलब्धि नित्य है, अर्थात प्रत्यक्षादि साधनों से इसकी प्रतीति नहीं हो सकती, इसके विपरीत महत् की उपलब्धि नित्य है-

अगोणोमहर्तश्चोपलबध्यनुपलब्धि नित्ये व्याख्याते। -(वैशेषिक 7/1/8)

सम्पूर्ण वैशेषिक दर्शन में सभी स्थानों पर यह संदेह विद्यमान रहता है कि अणु शब्द का प्रयोग 'अतिसूक्ष्म' के अर्थ में हुआ है अथवा परमाणुओं (Atoms) के अर्थ में। प्रशस्तपाद भाष्य में पृथिवी, अप, तेज और वायु, इन चारों को दो प्रकार का बताया गया है- एक तो परमाणु अवस्था वाले, जो नित्य है और दूसरे कार्य-लक्षण वाले, जो अनित्य हैं।

परमाणु अखंड और निरवयव हैं

त्रसरेणु द्वयअणुकों के संयोग से प्राप्त होते हैं। ये द्वयअणुक जिससे बनते हैं उन्हें 'अणु' या 'परमाणु' के नाम से जाना जाता है। कार्यवस्था में वही द्रव्य होगा जो सावयव होगा और जो कोई भी सावयव होगा वही कार्यावस्था में होगा। खंड करते करते जिस स्थल पर कार्यावस्था समाप्त हो जायेगी, वहां पर सावयवता भी समाप्त हो जायेगी। अत: कारणावस्था वाले परमाणु निरवयव होते हैं। द्वयअणुक और त्रसरेणु कार्यावस्था में हैं, अत: वे सावयव है।

परमाणु में चारों भूतों के अपने-अपने गुण विद्यमान होते हैं। वैशेषिक सूत्र के अनुसार कारण में जो गुण होता है, वही कार्य में भी पाया जाता है।

कारणभावात् कार्य भावः। -(वैशेषिक 4/3)

इसका अर्थ हुआ कि यदि कार्यरूप पृथिवी में गंध है तो उसके परमाणु में भी गंध अवश्य होगी। इसी प्रकार जल के परमाणु में रस, अग्नि के परमाणु में रूप और वायु के परमाणु में स्पर्श गुण होता है। यदि ये गुण परमाणु में न होते तो कार्यावस्था के द्रव्य में भी नहीं पाये जाते। द्रव्य का परम उपादान कारण परमाणु हैं। न्यायवार्तिक में ईश्वर को जगत का निमित्त कारण और पृथिवी आदि के सूक्ष्म परमाणुओं को इसका उपादान कारण माना गया है।

आयुर्वेद, ग्रन्थों में पदार्थ की कल्पना

वैशेषिक सूत्र में जिस प्रकार रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न आदि गुण बताये गये है, उसी प्रकार चरक संहिता में भी परत्व, अपरत्व आदि गुणों का अपने ढंग से उल्लेख है। देश, काल, आयु, मान (परिमाण), पाक, वीर्य और रस आदि की अपेक्षा से परत्व और अपरत्व है। जो योजना इनको संयुक्त करती है, उसे 'युक्ति'

कहते हैं। गणना के काम में जो आये वह संख्या है। विभिन्न पदार्थों के साथ मिल जाने का नाम संयोगहै। यह संयोग या तो दोनों अवयवों के कर्म से उत्पन्न होता है, या एक के कर्म से ही, और यह अनित्य होता है। अलग-अलग हो जाने को विभाग कहते हैं। असंयोग-विलक्षणता और अनेकता का होना ही पृथक्त्व है। पुनर्मान (फिर से जो नापा जाये) की संज्ञा परिमाण है। करण (Preparation) का नाम संस्कार है। चिकित्सा कार्य में इन सब का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

वैशेषिक के परमाणुओं का भी चरक संहिता में एक स्थान पर उल्लेख है। शरीर के अवयवों का विभाजन करते जाये तो अपरिसंख्येय परमाणु प्राप्त होंगे। ये परमाणु अतिसूक्ष्म, अनगिनत और अतीन्द्रिय है। इन परमाणुओं के संयोग-विभाग में वायु और कर्म कारण है।

शरीरावयावस्तु परमाणुभेदेनापरिसंख्येया भवंति, अतिबहुत्वादाति-सौक्ष्मादतीन्द्रियत्वाच्च।
तेषां संयोग विभागे परमाणूनां कारणं वायु:कर्म स्वाभावश्च॥ -(चरक, शारीर, 7/17)

सुश्रुत में चरक का अनुकरण- सुश्रुत ग्रंथ में पंच महाभूत का वर्णन चरक संहिता के ही समान है। आयुर्वेद के साहित्य में प्रयुक्त 'द्रव्य' शब्द पूर्णतया उस अर्थ में अभिप्रेत नहीं है जैसा कि वैशेषिक दर्शन में, परन्तु फिर भी कई स्थानों पर इस शब्द में वैशेषिक दर्शन की भावना परिलक्षित होती है।

अष्टांगसंग्रह के रचनाकार वाग्भट्ट ने भी चरक की भांति परभाणु शब्द का प्रयोग किया है। शरीर के सभी अवयव परमाणुभेद से अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण असंख्येय होते हैं। इन परमाणुओं के संयोग (द्वयअणुकादि बनने) और विभाग (द्वयअणुकादि के टूटने) में कर्म से प्रेरित वायु ही कारण है।

सर्व एव त्ववयवा: परमाणुभेदेनाति सौक्ष्म्यादसंख्ये यतां यान्ति।
तेषां संयोगविभागेपरमाणूनां कर्मप्रेरितो वायुः कारणम्॥

- (अष्टांग, शारीर, 5/10/102)

सांख्य और योग दर्शन में परमाणुवाद-

सांख्य और योग दर्शन की त्रिगुणात्मक, प्राकृतिक विवेचना से रासायनिक और भौतिक परिवर्तनों की स्पष्ट व्याख्या में कोई महत्वपूर्ण सहयोग उपलब्ध नहीं हो पाया परंतु परमाणु की कल्पना की उपेक्षा भी योगदर्शन के भाष्यकारों द्वारा नहीं की गई। यह तथ्य भी विचारणीय है कि परमाणुवाद को वह स्वरूप नहीं मिल पाया जो बाह्य जगत के परिवर्तनों की व्याख्या करने में समर्थ हो पाता। दोनों युगों के तात्विक चिंतन के उद्देश्य ही पृथक थे, इसलिए त्रिगुणों और पंचभूतों की तन्मात्राओं के आधार पर रसायन शास्त्र को विकसित नहीं किया जा सका।

निष्कर्ष- न्याय और वैशेषिक दर्शन वस्तुवादी (Realistic) हैं अर्थात् वैशेषिक परमाणुवाद एक कपोलकल्पना या लोकमत नहीं है जो केवल पृथिवी, अप, तेज और वायु के कणों से सम्पूर्ण सृष्टि को निर्मित हुआ मानता है। इसकी अन्तर्निहित स्वीकार्य विशेषताएं भी हैं। इसी तरह यह पूर्ण भौतिकवाद को भी प्रश्रय नहीं देता जी सम्पूर्ण जड़ और चेतन जगत को भौतिक परमाणुओं के संयोग का परिणाम मात्र मानता है। वैशेषिक दर्शन मन और आत्मा के पृथक अस्तित्व को स्वीकार करता है। यह परमाणुवाद

को ईश्वरवाद के साथ समन्यवित करता है। वैशेषिक ईश्वर सर्वनियामक है, सर्वसृष्टा नहीं।

"पदार्थ" शब्द की रचना और प्रयोग समग्र संसार के दर्शन के इतिहास में एक अपूर्व आविष्कार है। वैदिक दर्शन और दर्शन की अन्य शाखाओं-प्रशाखाओं में जितने आलोच्य विषय हैं, सभी को एक शब्द के द्वारा निरूपित करने का श्रेय महर्षि कणाद को है। दो हजार वर्षों पूर्व महर्षि कणाद ने जिस शब्द का प्रयोग किया था, उससे व्यापकतर शब्द का प्रयोग अभी तक किसी ने नहीं किया। इस शब्द के भीतर भावात्मक और अभावात्मक, समस्त विषयों का समावेश है। इस शब्द की व्यापकता इसी बात से परिलक्षित होती है कि पदार्थ, शब्द का प्रयोग सांख्य, योग, न्याय, मीमांसा, बौद्ध, जैन, वेदांत और आयुर्वेद सभी दार्शनिक विधाओं ने अपनाया और महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। वैशेषिक दर्शन का पदार्थ विभाग सूक्ष्मायुक्ति का आश्चर्यजनक निदर्शन है। आधुनिक दर्शन में भी इसकी तुलना बिरले ही प्राप्त होती है।

संदर्भ : यथास्थान उल्लेखित।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. प्राचीन भारत में रसायन का विकास- स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती, प्रकाशक पुस्तकायन 2/4240-ए, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली संस्करण 2004, ISBN 81-85314-06-04.
2. भारतीय दर्शन -एस सी चटर्जी और डी एम दत्त, प्रकाशक मोतीलाल बनारसी दास इंटरनेशनल, नयी दिल्ली, संस्करण-2023, ISBN 819621376-X.
3. भारतीय दर्शन-महामहोपाध्याय डॉ उमेश मिश्रा, प्रकाशक उत्तर प्रदेश हिंदी संसथान, लखनऊ संस्करण 2017, ISBN 978-93-82175964.
4. वेद व विज्ञान- स्वामी प्रत्यागात्मानंद सरस्वती, प्रकाशक विश्व विद्यालय प्रकाशन वाराणसी, संसकरण 2004, ISBN 81-7124-095.
2. ए हिस्ट्री ऑफ़ हिंदू केमिस्ट्री- प्रफुल्ल चंद्र राय, प्रकाशक कुरुक्षेत्र प्रकाशन कोच्चि संस्करण 2022 ISBN 978-93-84582-12-8.
3. वैदिक कालीन रसायन विज्ञान- डॉ. विष्णु दत्त शर्मा पृष्ट 65-70, पुस्तक- वेद विज्ञान श्री: (वैदिक वाङ्मय में विज्ञान) संपादिका: डॉ उर्मिला श्रीवास्तव, मुद्रक-सुलेख मुद्रणालय, इलाहाबाद, संस्करण 2022.

❐